Toppersnotes
Unleash the topper in you

UK – PCS

State Civil Services

Uttarakhand State Combined Civil/Upper Sub-Ordinate Exam

(Preliminary & Main)

पेपर – 3 भाग – 1

भारत एवं उत्तराखंड भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

भारतीय भूगोल

1.	भारत की स्थिति एवं विस्तार	1
2.	भारत के भौगोलिक (भौतिक) भू– भाग	9
3.	भारतीय मानसून	38
4.	भारत का अपवाह तन्त्र	52
5.	भारत की प्राकृतिक वनस्पति (जैव संरक्षण एवं जीव मंण्डल)	64
6.	भारत की मिट्टियां	82
7.	भारत में खनिज संसाधन	110
8.	भारत के प्रमुख उद्योग	120
9.	भारत का परिवहन तन्त्र	124
10.	भारतीय कृषि	135
11.	विविध सामान्य ज्ञान विश्व एवं भारत	141

उत्तराखंड भूगोल

1.	उत्तराखंड का भूगोल	154
2.	अर्थव्यवस्था	157
3.	सांस्कृतिक जीवन	160
4.	अपवाह तंत्र	162
5.	प्राकृतिक वनस्पति	165
6.	कृषि एवं सिंचाई	166
7.	औद्योगिकी	168
8.	कृषि जलवायु क्षेत्र	169
9.	बागवानी	170
10.	उत्तराखंड में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की स्थिति	174
11.	पशुपालन	176
12.	औद्योगिक क्षेत्र में नियंत्रित करने वाला नीतिगत ढाँचा	174
14.	पर्यटन समस्यायें एवं संभावनाएँ	186
15.	जनसंख्या वितरण, घनत्व लिंगानुपात	187
16.	नगरीकरण एवं नगर केन्द्र	187
17.	अनुसूचित जातियाँ	188
18.	अनूसूचित जनजातियाँ	189
19.	औद्योगिक विकास	190
20.	प्रमुख जल विद्युत परियोजनाएँ	191

21.	पर्यावरण एवं वन आंदोलन	198
22.	उत्तराखंड में लोकप्रिय राष्ट्रीय उद्यान और वन्य जीव अभ्यारण्य	199
23.	चिपको आंदोलन	201
24.	मैती आंदोलन	202
25.	सार्वजनिक वित्त एवं मौद्रिक प्रणाली	204
26.	करो के प्रभाव	205
27.	सरकारी खातो का पुनर्गठन	208
28.	प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर	216
29.	बजटीय घाटा राजस्व	220
30.	राजकोषीय उत्तरदायित्व	225
31.	बजट प्रबंधन अधिनियम राजकोषीय नीति	231
32.	केन्द्र राज्य वित्तीय संबंध	234
33.	उत्तराखंड वित्त आयोग	235
34.	मौद्रिक नीति	237
35.	भारतीय मौद्रिक प्रणाली भारतीय रिजर्व बैंक	241
36.	व्यापारिक बैंको की भारतीय अर्थव्यवस्था में भूमिका	244
37.	उत्तराखंड पुनर्वास एवं नवनिर्माण प्राधिकरण	246
38.	उत्तराखंड हिमालय एवं अन्य हिमालय क्षेत्रो में आपदा	253

39.	उत्तराखंड संकट में मानव जनित योगदान	257
40.	उत्तराखंड का लैंडस्केप	265
41.	आधुनिक आपदा या आपदा प्रबंधन प्रक्रियाएँ	272
42.	मानव निर्मित आपदायें	280
43.	राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष 2015–2020	285
44.	उत्तराखंड की राजव्यवस्था	285
45.	अनुसूचित जनजातियों के विकास के संवैधानिक प्रावधान	294
46.	स्थानीय शासन एवं पंचायती राज	297
47.	सामुदायिक विकास	299
48.	जलवायु परिवर्तन और झील के फटने का खतरा	305
49.	जल विद्युत परियोजनाएँ	307
50.	मनुष्य पशु संघर्ष	307
51.	भ्रष्टाचार निवारण लोकायुक्त	309

भारतीय भूगोल

(Indian Geography)

भारत का विस्तार–

- भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्ध एवं पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत की आकृति चतुष्कोणीय है ।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4 से 37°6 उत्तरी गोलार्ध में है ।
- देशांतरीय विस्तार 68°7 से 97°25 पूर्वी देशांतर में है ।
- भारत का विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां एवं जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

विश्व में स्थान	देश का नाम	
	क्षेत्रफल के अनुसार	जनसंख्या के अनुसार
प्रथम	रूस	चीन
द्वितीय	कनाडा	भारत
तृतीय	चीन	यू.एस.ए
चतुर्थ	यू. एस. ए.	इंडोनेशिया
पंचम	ब्राजील	ब्राजील
षष्ठ	ऑस्ट्रेलिया	पाकिस्ताान
सप्तम	भारत	नाईजीरिया
अष्टम	अर्जेनटीना	बांग्लादेश

- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी है, जोकि विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42% है ।
- भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का 17.5% हिस्सा निवास करता है ।
- उत्तर से दक्षिण विस्तार 3214 किमी है और पूर्व से पश्चिम में विस्तार 2933 किमी है ।
- भारत का सबसे पूर्वी बिंदु अरुणाचल प्रदेश में वलांगु (किबिथू) है।
- सबसे पश्चिमी बिंदु गुजरात में गोरमाता सक्रिय (कच्छ जिला) में है ।
- सबसे उत्तरी बिन्दु इन्द्रा कॉल है, जो कि केन्द्र शासित प्रदेश लेह में स्थित है ।
- सबसे दक्षिणतम बिन्दु इन्दिरा पॉइंट है, इंदिरा पॉइंट को पहले पिग्मेलियन पॉइंट और पार्सन्स पॉइंट के नाम से जाना जाता था। इन्दिरा पॉइंट निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी भूमध्य रेखा से दूरी 876 किमी है ।
- प्रायद्वीपीय भारत का सबसे दक्षिणी भाग तमिलनाडु में केप कोमोरिन (कन्याकुमारी) में स्थित है।
- भारत की स्थल सीमा की लम्बाई 15200 किमी है ।
- तटीय भाग की लम्बाई है 7516 किमी (द्वीप समूह मिलाकर)। केवल भारतीय प्रायद्वीप की तटीय सीमा 6100 किमी है ।
- भारतीय मानक समय रेखा 82°30 पूर्वी देशांतर पर है। मानक समय रेखा 5 राज्यों से होकर गुजरती है ।
  - उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर)
  - छत्तीसगढ
  - मध्य प्रदेश

- आंध्र प्रदेश
- ओडिशा

- भारतीय मानक समय और ग्रीनविच समय के बीच अंतर 5.30 घण्टे का है । भारतीय समय ग्रीनविच समय से आगे चलता है ।
- सर्वाधिक राज्यों की सीमा को छूने वाला भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश कुल 9 राज्यों से सीमा बनाता है ।
  - उत्तराखण्ड
  - हरियाणा
  - दिल्ली
  - हिमाचल प्रदेश
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - बिहार

- भारत के कुल 9 राज्य एवं – केन्द्र शासित प्रदेश समुद्री तट से लगे हुए हैं।
  - गुजरात
  - महाराष्ट्र
  - गोवा
  - कर्नाट
  - केरल
  - तमिलनाडु
  - आरूणाचल प्रदेश
  - उडीसा
  - पश्चिम बंगाल

- केन्द्र शासित प्रदेश
  - लक्षद्वीप
  - आण्डमान निकोबार
  - दमन और दीव
  - पुदुच्चेरी (पांडिचेरी)
- हिमालय को छूने वाले 11 राज्य व 2 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।

  राज्य
  - हिमाचल प्रदेश
  - उत्तराखण्ड
  - सिक्किम
  - अरुणाचल प्रदेश
  - नागालैंड
  - मणिपुर

- मिजोरम
- त्रिपुरा
- मेघालय
- असम
- पश्चिम बंगाल

केंद्र शासित प्रदेश
- जम्मू कश्मीर
- लेह

- भारत के 8 राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है।
  - गुजरात
  - राजस्थान
  - मध्य प्रदेश
  - छत्तीसगढ
  - झारखण्ड
  - पश्चिम बंगाल
  - त्रिपुरा
  - मिजोरम
- भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य गोवा है ।
- भारत का सबसे कम नगरीकृत राज्य हिमाचल प्रदेश है ।
- भारत का मध्य प्रदेश सबसे अधिक वन वाला राज्य है ।
- भारत का हरियाणा सबसे कम वन वाला राज्य है ।
- भारत का मौसिनराम (मेघालय) में सबसे अधिक वर्षा होती है ।
- भारत के केन्द्र शासित प्रदेश लेह में सबसे कम वर्षा होती है ।
- अरावली पर्वत सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है ।
- हिमालय पर्वत सबसे नवीन पर्वत श्रृंखला है ।

भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं पडोसी देश

- भारत की कुल 15200 किमी सीमा रेखा 92 जिलों और 17 राज्यों से होकर गुजरती है ।
- भारत की तटीय सीमा 7516 किमी है जोकि 9 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को स्पर्श करती है। केवल प्रायद्वीप भारत की तटीय सीमा रेखा 6100 किमी है ।
- भारत के मात्र 5 राज्य ऐसे है जो किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा और तट रेखा को स्पर्श नहीं करते है –
  - हरियाणा
  - मध्य प्रदेश
  - झारखण्ड
  - छत्तीसगढ
  - तेलंगाना

- भारतीय राज्यों में गुजरात की तट रेखा सर्वाधिक लंबी है। इसके बाद आंध्र प्रदेश की तट रेखा है ।
- त्रिपुरा तीन तरफ से बांग्लादेश से घिरा राज्य है ।
- भारत के 7 पडोसी देश भारत की थल सीमा को स्पर्श करते हैं –
  - पाकिस्तान – 3323 किमी
  - चीन – 3488 किमी
  - नेपाल – 1751 किमी
  - बांग्लादेश – 4096.7 किमी
  - भूटान – 699 किमी
  - म्यांमार – 1643 किमी
  - अफगानिस्तान – 106 किमी

- भारत की सबसे लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश के साथ लगती है ।
- भारत सबसे छोटी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा अफगानिस्तान के साथ साझा करता है जोकि केवल 80 किमी है ।
- भारत के 2 पडोसी देश जो भारत की तटीय सीमा के साथ जुडे हुए हैं।
  1. श्रीलंका
  2. मालद्वीप
- ऐसे देश जो थल एवं जल दोनों सीमा बनाते हैं।
  - पाकिस्तान
  - बांग्लादेश
  - म्यांमार
- पाकिस्तान के साथ भारत के 3 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते हैं –

राज्य
1. पंजाब
2. राजस्थान
3. गुजरात

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- चीन के साथ भारत के 4 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश सीमा साझा करते हैं –

राज्य
1. हिमाचल प्रदेश
2. उत्तराखण्ड
3. सिक्किम
4. अरुणाचल प्रदेश

केन्द्र शासित प्रदेश
1. जम्मू कश्मीर
2. लेह

- नेपाल के साथ भारत के 5 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. उत्तराखण्ड
  2. उत्तर प्रदेश
  3. बिहार
  4. सिक्किम
  5. पश्चिम बंगाल

- भूटान के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं
  1. पश्चिम बंगाल
  2. सिक्किम
  3. अरुणाचल प्रदेश
  4. असम

- म्यांमार के साथ भारत के 4 राज्य सीमा साझा करते हैं –
  1. अरुणाचल प्रदेश
  2. नागालैण्ड
  3. मणिपुर
  4. मिजोरम

अफगानिस्तान के साथ भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश सीमा बनाता है – (केवल 80 किमी POK)
  - लद्दाख
- पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाडी श्रीलंका को भारत से अलग करती है। पाक जलडमरूमध्य को पाक जल संधि के नाम से भी जाना जाता है।
- मेकमोहन रेखा भारत और चीन के बीच में स्थित है । यह रेखा 1914 में शिमला समझौते में निर्धारित की गयी थी ।
- 1886 में सर डूरण्ड द्वारा भारत और अफगानिस्तान के बीच में डूरण्ड रेखा स्थापित की गई थी। परन्तु यह रेखा अब अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान के मध्य है ।
- भारत और पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ रेखा है। रेडक्लिफ रेखा का निर्धारण 15 अगस्त, 1947 को सर सिरिल रैडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा आयोग द्वारा किया गया था ।

सीमावर्ती सागर :–

- सीमावर्ती सागर क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।
  - भारत का अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है । परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।

Impact of Latitude:-

- भारत का अक्षांशीय विस्तार 30° होने के कारण भारत में जलवायु, मृदा तथा वनस्पति से संबंधित विविधता पाई जाती है ।

- कर्क रेखा भारत को दो प्रमुख भागों में बाँटती है– भारत का दक्षिणी भाग ऊष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में तथा उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में स्थित है ।
- फिर भी भारत में ऊष्ण कटिबन्धीय मानसून जलवायु पाई जाती है क्योंकि उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत साइबेरिया से आने वाली ठण्डी पवनों को रोकता है ।
- कर्क रेखा भारत के निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है ।

Gujarat	**Jharkhand**
Rajasthan	**West Bengal**
Madhya Pradesh	**Tripura**
Chhattisgarh	**Mizoram**

Impact of Longitudinal Extension:-

- भारत का देशान्तरीय विस्तार 30° होने के कारण भारत के सबसे पूर्वी तथा पश्चिमतम भाग के बीच 2 घंटे का अन्तर पाया जाता है ।
- 82½°E देशान्तर को भारत की स्थानीय समय गणना के लिए एक मानक देशान्तर के रूप में चुना गया है ।
- भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½°E निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है:–
- **Uttar Pradesh**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Odisha**
- **Andhra Pradesh**

- भारत–पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत–चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत–अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

भारतीय उपमहाद्वीप (Indian Subcontinent):-

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित है जैसे – हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकनयोगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते है ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित है जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।

- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित हैः–

  - **INDIA**
  - **Pakistan**
  - **Afghanistan**
  - **Nepal**
  - **Bhutan**
  - **Bangladesh**
  - **Shri Lanka**
  - **Maldives**

भारत का प्रादेशिक जल सीमा, संलग्न क्षेत्रमण्डल तथा अनन्य आर्थिक क्षेत :→

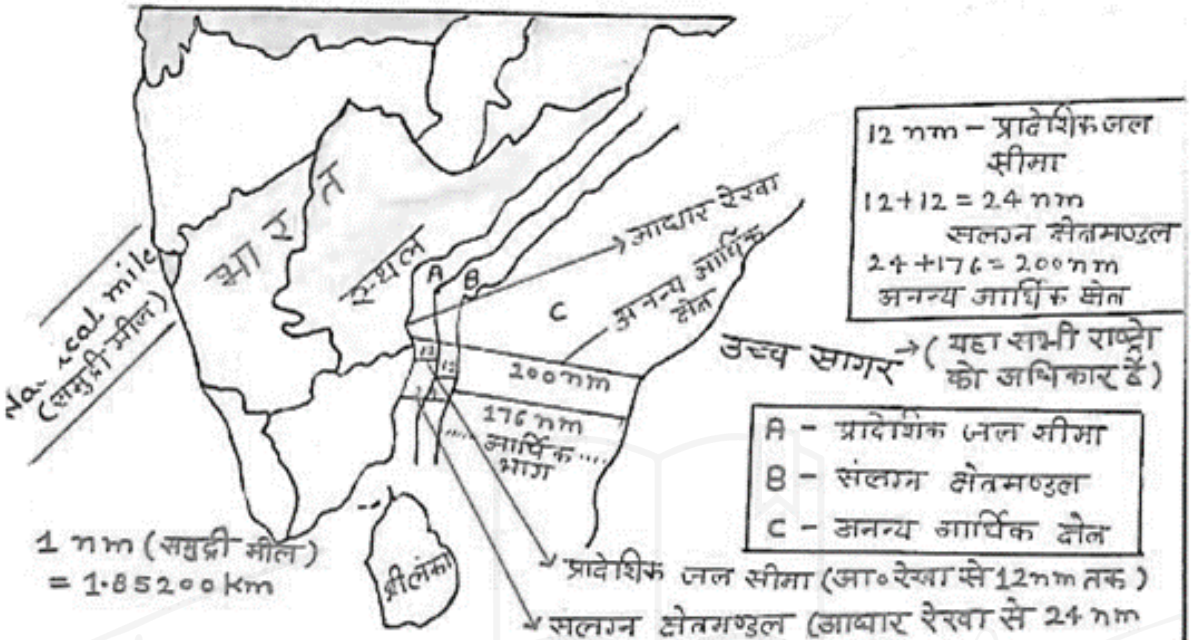

भारत की प्रादेशिक जल सीमा या समुद्री सीमा → भारतीय 'प्रादेशिक जल सीमा' तट रेखा से 12 nm
(Maritime Belt) (Territorial sea) की दूरी तक हैं।

इस क्षेत के उपयोग का भारत को पूर्णतः अधिकार हैं।

अविच्छिन्न मंडल या संलग्न क्षेत → इसकी दूरी आधार रेखा से 24 nm
(Contiguous Zone) तक हैं। इस क्षेत में भारत को राजकोषीय अधिकार, सीमा शुल्क से सम्बन्धित प्रदूषण नियंत्रण से सम्बन्धित अधिकार हैं।

अनन्य आर्थिक क्षेत्र – अनन्य आर्थिक क्षेत्र आधार रेखा से 200 nm
(Exclusive Economic Zone) तक हैं। इस क्षेत के अन्तर्गत भारत को खनिज संपदा, सागरीय जल शक्ति, सागरीय जीवो आदि के सर्वेक्षण, विदोहन, संरक्षण एवं वैज्ञानिक अनुसंधान व नये द्वीपो के निर्माण का अधिकार प्राप्त हैं। भारत का अनन्य आर्थिक क्षेत 2.02 मिलियन वर्ग कि मी क्षेत में फैला हैं।

उच्च सागर → अनन्य आर्थिक क्षेत के बाद उच्च सागर का विस्तार हैं जहाँ सभी राष्ट्रो को समान अधिकार हैं।

भारत का देशान्तरीय विस्तार अधिक हैं। 82°30' पूर्वी देशान्तर रेखा को देश का मानक याम्योत्तर माना गया हैं यह इलाहाबाद के नैनी से होकर गुजरती हैं। भारतीय मानक समय (I.S.T) ग्रीनविच मीन टाइम (G.M.T) से 5:30 घण्टे आगे हैं।

भारत के भौगोलिक भू–भाग

(Physiography Devision of India)

भारत के भौगोलिक भू–भागः–

1. **Himalayan Mountain Region**
2. **Northern Plain Region**
3. **Peninsula Plateau Region**
4. **Coastal Plain Region**
5. **Island Groups Region**

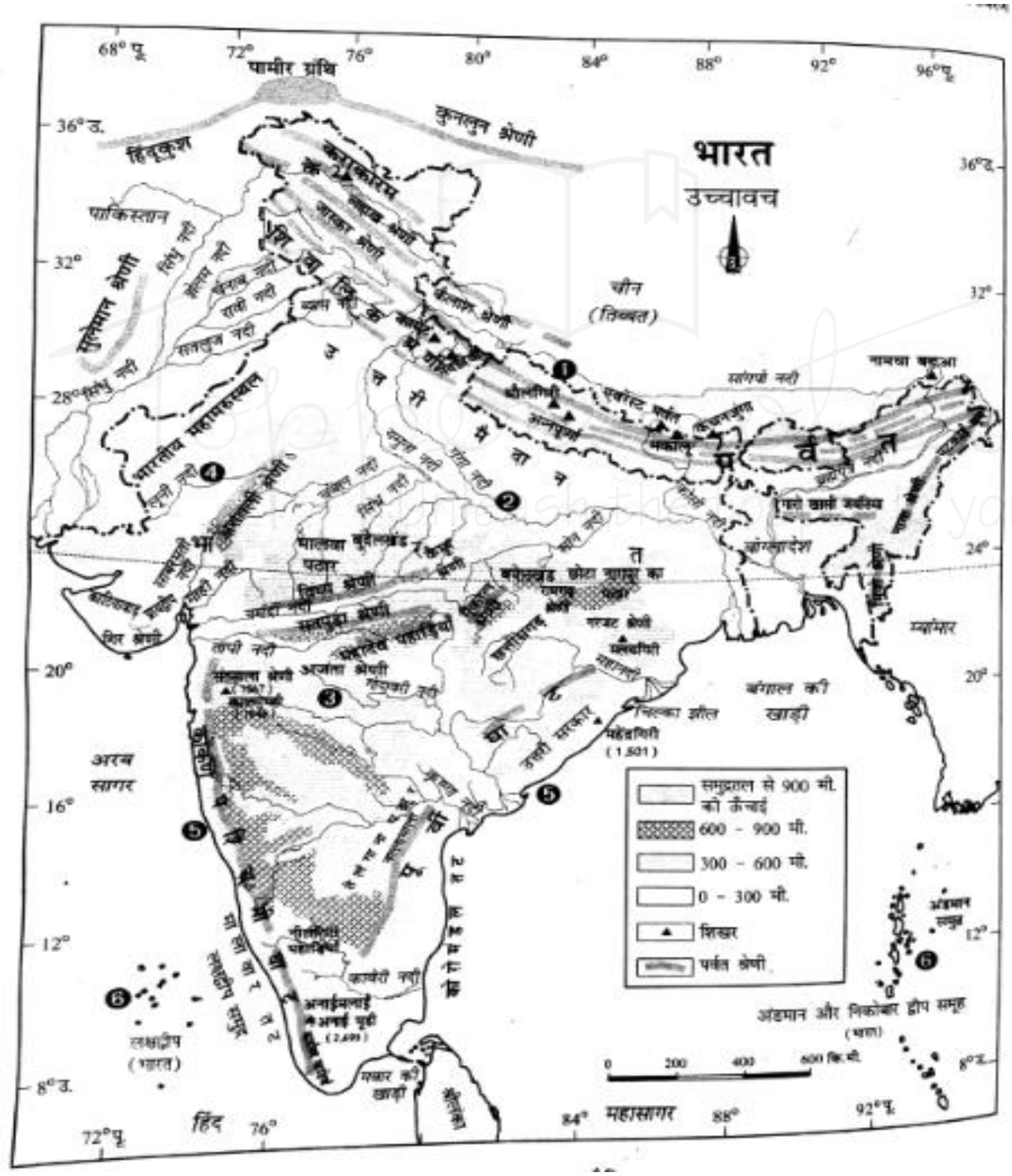

1. <u>हिमालय पर्वतीय प्रदेशः–</u>

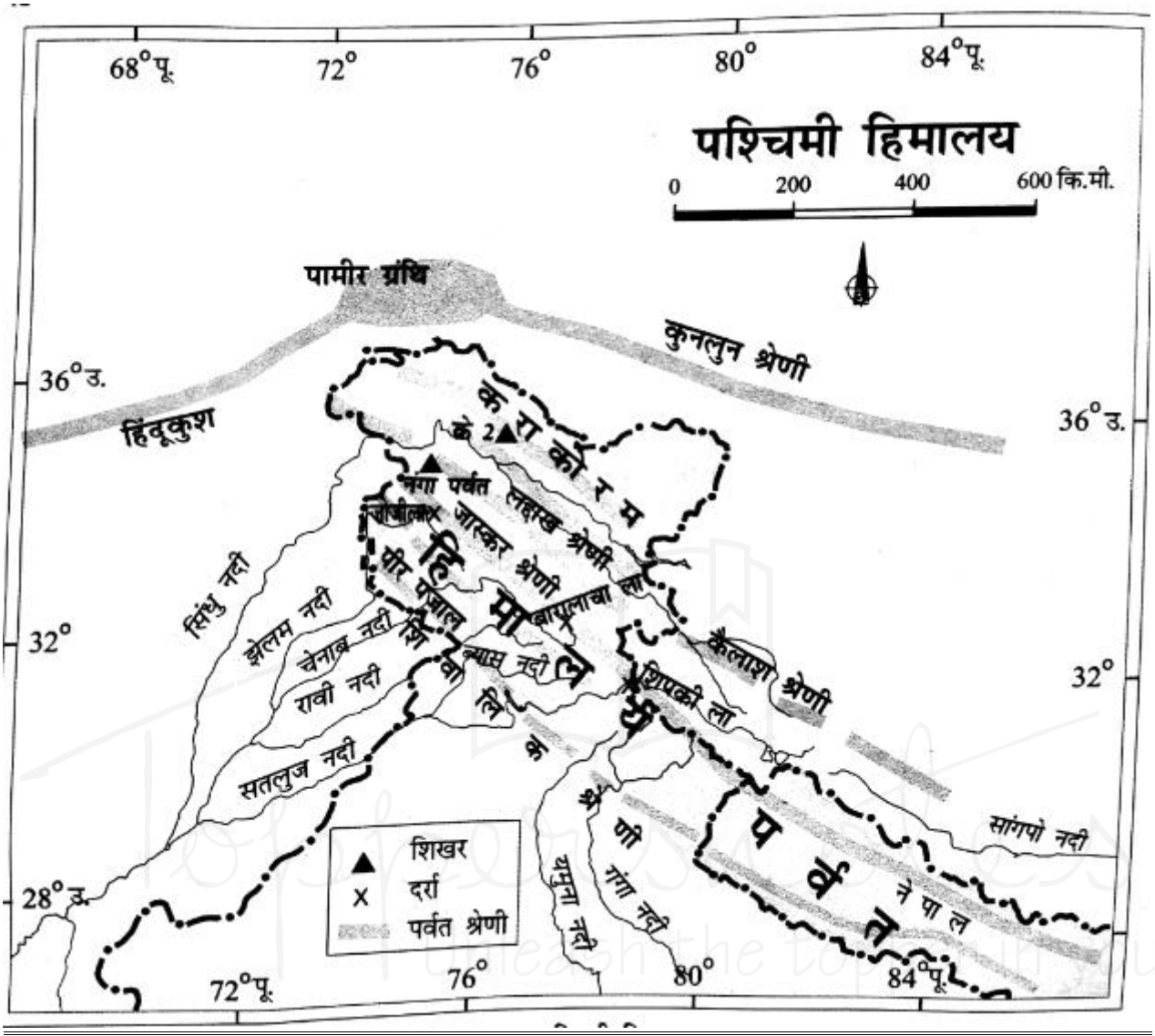

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरशरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शयरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शयरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता हैः–

A. <u>Trans Himalaya:-</u>

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती हैः–

(a) काराकोरम श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:–
  1. बतुरा
  2. हिस्पार
  3. बियाको
  4. बालतोरो
  5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) <u>लद्दाख श्रेणी:–</u>

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'रकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है ।

(c) <u>जास्कर श्रेणी:–</u>

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note:- <u>लद्दाख पठार:–</u>

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए
  यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

B. <u>Main Himalaya:-</u>

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।

- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ हैः–
  (i). वृहत हिमालय **(Great Himalaya)**
  (ii). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
  (iii). शिवालिक **(Shivalik)**

(a). वृहत हिमालय (Great Himalaya):-

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल–चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान **etc.**
- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे है जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रेः–

➢ **Burzila**	➢ **Niti**
➢ **Zajila**	➢ **Lipu Lekh**
➢ **Baralachha**	➢ **Nathula**
➢ **Shipkila**	➢ **Jaleepla**
➢ **Mana**	➢ **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्राः–

- यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से घुसपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्राः–

- यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
- इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बारालच्छा दर्राः– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्रा:–

- यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
- इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीति:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्रा:–

- यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है । अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
- इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा:–

- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
- इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
- इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
- मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जलीपला दर्रा:– यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडिला दर्रा:– यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya):-**

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम है:–
  - **J & K – Pir Panjal**
  - **Himachal Pradesh – Dhauladhar**
  - **Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba**
  - **Nepal – Mahabharat**

- **Sikkim – Dokya**
- **Bhutan – Black Mountain**

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित हैं:-
  - कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
  - कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधर
  - कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय – मसूरी
  - काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते हैं । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे **'मर्ग'** तथा उत्तराखण्ड मे **'बुग्याल, पयाला'** कहा जाता हैं ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती हैं ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते हैं ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते हैं । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं :-
  1 पीरपंजाल दर्रा:-यह दर्रा श्रीनगर को **POK** से जोडता हैं ।
  2 बनिहाल दर्रा:- श्रीनगर को जम्मू से जोडता हैं, **NH-1A** इस दर्रे से गुजरता हैं । इस दर्रे में जवाहर सुरंग स्थित हैं ।

ऋतु प्रवास **(Transhumance):-**

- ऋतुओं में होने वाले परिवर्तन के साथ जब स्थानीय समुदाय अपने पशुओं के साथ चारे तथा जल की
  तलाश/खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन करते हैं । उसे ऋतु प्रवास कहा जाता हैं ।
- जम्मू-कश्मीर में गुर्जर तथा बकरवाल समुदाय ऋतु प्रवास करते हैं ।
- ग्रीष्म ऋतु के दौरान ये पर्वतों की ओर तथा शीत ऋतु में घाटी क्षेत्र की ओर पलायन करते हैं ।

करेवा **(Karewa):-**

- पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के कारण कश्मीर घाटी क्षेत्र में अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों
  द्वारा लाए गए अवसादों से भर गई तथा इन्हीं अवसादों को करेवा कहते हैं ।
- करेवा कश्मीर घाटी क्षेत्र में पाए जाने वाले उपजाऊ हिमनद, नदी एवं झील के अवसाद **(Glacial, Riverine & Lacustrine)** हैं । इस अवसादों का उपयोग केसर व चावल की खेती के लिए किया जाता हैं ।

(C) शिवालिक (Shivalik):-

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - **J & K – Jammu Hills**
  - **Uttarakhand – Dudwa/Dhang** (दूदवा/धांग)
  - **Nepal – Churiaghat** (चूडियाघाट)
  - **A.P. – Dafla** (दाफ्ला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का
  निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गईं जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते है ।
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते है ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।